

१. मास ॥

८७ विष्णु मारुत

ASHA ARCHIVES 3031

१ सनायनायदद्यामीनां वंशं दीव्यप्रसादिनां वसवीनां द्युनेवदह्यं गावात्तु विना॥

शीरुवानीधं कृत्वा यत्नमः॥

१ संमग्न ४४ अक्षरकुट्टयकूट्टु आनखू
संवास्वसं प्रीगावात्तु खूया अक्षरदिनरुना॥

५२२ १२३ १२४

०१५ १६ १७ १८ १९ २०

१ भाग ॥

८७ विष्णु काशस्तव

ASHA ARCHIVES 3031

~~विष्णु च~~ विष्णु च ॥ विष्णु च र्ब विमल गा उ विष्णु ॥
 ल वा ई ॥ श्री वा रु मं व न मूर्ख कलि वा ज व र्क ॥ न उ उ य हि
 मल वि नु क र्ण नू ता न ॥ विष्णु च र्ब ह व सूर्त सत त न मा मि
 ॥ ग मी स्म ज म्ब ल य ति ग न त ग्ध व न ग म्ब र्च कि त्त व ग
 ले न मि ता ग ह मी ॥ म लि र्ग म तु ग म्ब व य न कि सा ई ॥
 विष्णु च र्ब ह व सूर्त सत त न मा मि ॥ २ ॥ ना ग रु ह व क

५५५२

न क र्ण र व न त्र मा ला ॥ वृ षा म जी म ति वि रु धि त ह त कूर्त
 व र्क र्क म व र्ण ति ॥ र्ख व न द क व र्ण ॥ विष्णु च र्ब ह व
 सूर्त सत त न मा मि ॥ ३ ॥ सो व क क र्क र्क ग र्ब त व नी र्वि द
 र्क र्क र्क ॥ ल ति त व र्ब व न मूल र्क र्क ॥ आ या दि क र्क ॥ नि
 क र्क क र्क नृ य र्क र्क ॥ विष्णु च र्ब ह व सूर्त सत त न मा मि
 ॥ य र्क र्क का ग ल र्क र्क ॥ स क र्क मा व का र्क ॥ शी मा नृ

कावत्र जयादिकवत्रिकले। कजष्ट काहनूमतादिगला
कयाले॥ विद्युग्य वीहव सूत सततवमामि॥ ॥ स्वर्ग
दिमर्गवनादिगतागलाकेदवसमस्तगज वदि
तयादयधर्म। ससाव ४४ स्व रुयवन्धतयायनागं॥ विद्य
ग्यव हवसूत सततवमामि॥ ॥ रुययध्नतिरधृत
ग्यातध्वन धवतिर्जलवायुसूतजध्वनं गनिविदुस्

नादितवम्यतनं यनमामिगलन्धवयायहवर्ग॥
नमितानमिततवयादयुगं रुगयादसूकामलेनारकवर्ग
कमलासनसंयुतमाक कवर्ग यनमामिगनन्धवयादयुगं
॥ धवमूध्वमम्युजपागध्वनं धलतागविह्वितव
त्रध्वनं धवकंकनकयुवनूयुवर्ग यनमामिगनन्धव
यादयुगं॥ ॥ कनकाकमवर्गसूदरुध्वनं सुजय

अथ वचनं वक्तुं धर्मं यद्विद्यते तदादि सर्वं वक्तुं न
 मामि गतं न भवति यदयं ॥ १० ॥ यत्तु न विद्यते सर्वं
 यासादयद्विद्यते न किं न भवति ॥ ११ ॥ यत्तु न विद्यते न
 किं न भवति न संयतं मामिति न ॥ १२ ॥ यत्तु न विद्यते न
 तत्तु न विद्यते न संयतं मामिति न ॥ १३ ॥ यत्तु न विद्यते न
 वयवमिति न संयतं मामिति न ॥ १४ ॥ यत्तु न विद्यते न
 यत्तु न विद्यते न संयतं मामिति न ॥ १५ ॥ यत्तु न विद्यते न

ॐ नमो २

सद्युर्वेत्तु यन्निधयथा गंतुं सद्युजि नैष्टा वं विधिना ज्ञा ॥
 १३ ॥ लक्ष्मि विधिना ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ॥
 युजि नैष्टा यद्यद्वं मजानता ॥ १४ ॥ विद्युत्वनलुवं
 पूर्णं यद्विष्टायना नैष्टा लक्ष्मि सकान्तो तां यद्विष्टा
 मूर्तिरुत्पद्यते ॥ १५ ॥ तिष्ठिज वरदत्तं यद्विष्टा
 यद्विष्टा वरदत्तं ॥ १६ ॥

श्री ०५ नरनाथि

ARCHIVE

३०३१

१५

३०३१

मीमरा ८४० आवदाष्ट
क २ अरु मेवादिमिस
काष्ठ वाउठादिनमना॥

This image shows a fragment of a manuscript page, likely from an ancient text written in Coptic script. The fragment consists of ten lines of text, each containing several characters. The script is a stylized, angular form, characteristic of Coptic. The parchment is aged and yellowed, with some visible wear and tear at the edges. The text is arranged in a single column, and the fragment is irregularly shaped, with the right edge missing.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

